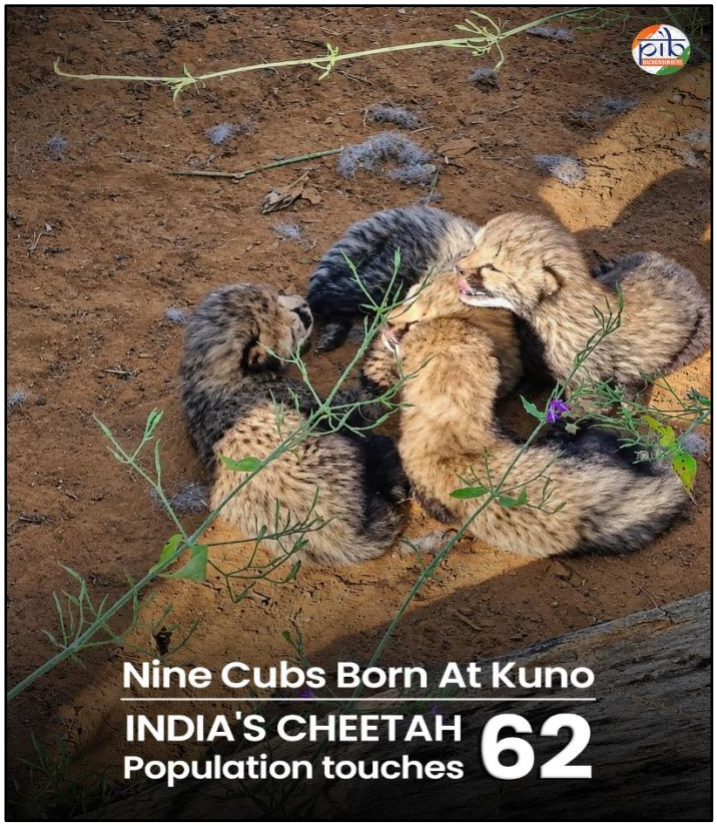
BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

चीतों की वापसी और बढ़ती रफ्तार

भारत में बढ़ रही है चीतों की आबादी

नवंबर 26, 2026

प्रकृति की गोद में एक सुबह



कूनो राष्ट्रीय उद्यान में सर्दियों की सुबह शांत वातावरण के बीच होती है। यहां के घास के मैदानों और झाड़ियों पर सूर्य की किरणें बिखरने लगती हैं। इसी प्राकृतिक परिवेश में एक ऐसी प्रजाति धीरे-धीरे फिर से अपना स्थान बना रही है, जो सात दशक पहले भारत से विलुप्त हो गई थी। कूनो में मध्य प्रदेश वन विभाग और भारतीय वन्यजीव संस्थान की संयुक्त फील्ड टीम रेडियो कॉलर से मिलने वाले संकेतों, वन्यजीवों की गतिविधियों के चिह्नों और उनके व्यवहार में होने वाले बदलावों के आधार पर चीतों की निगरानी करती है। इस वर्ष अक्टूबर और नवंबर में लगातार दो महीनों के दौरान की गई इन दैनिक निगरानी से दो विशेष खुशखबरियां सामने आईं–चीतों के दो नए शावक समूहों का जन्म।

प्रत्येक नए शावक का जन्म **प्रोजेक्ट चीता** के तहत वर्षों की योजना, वैज्ञानिक प्रबंधन, पशु चिकित्सा देखभाल और समर्पित क्षेत्रीय कार्यों का परिणाम है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हर नया जन्म इस बात का उत्साहजनक संकेत है कि अत्यधिक संवेदनशील स्वभाव वाले ये जानवर अपने नए परिवेश के अनुकूल ढल रहे हैं, यहां अपना ठिकाना बना रहे हैं और जंगल में जीवन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर रहे हैं। यह उनकी अनुकूलन क्षमता का प्रमाण है और साथ ही इस बात का सकारात्मक संकेत भी है कि यहां का प्राकृतिक परिवेश चीतों के लिए लगातार अधिक अनुकूल हो रहा है तथा भारत का चीता पुनर्वास कार्यक्रम

आगे बढ़ रहा है। सामूहिक रूप से ये घटनाक्रम भारत में चीतों की एक स्थायी आबादी विकसित करने के प्रयासों में एक नया अध्याय जोड़ते हैं। ये भारत की धरती पर जन्मी और पली-बढ़ी चीतों की एक नई पीढ़ी के उदय का भी संकेत हैं। इन नए शावकों का जन्म वैश्विक स्तर पर चीतों की विभिन्न आबादियों के संरक्षण के प्रयासों में भारत की बढ़ती भूमिका को भी दर्शाता है।

यह भी पढ़ें: एक नई रफ्तार: भारत में चीते की वापसी

कूनो में चीतों की नई पीढ़ी का आगमन

मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले में स्थित कूनो राष्ट्रीय उद्यान विंध्याचल पर्वत श्रृंखला के उत्तरी भाग में स्थित है। यह भारत के चीता पुनर्वास कार्यक्रम का प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। हाल ही में इस राष्ट्रीय उद्यान में दो बार चीतों के शावकों का जन्म हुआ, जिससे देश में चीतों की बढ़ती आबादी में नौ नए शावक जुड़ गए हैं।

पहले शावक समूह का जन्म **5 अक्टूबर 2026** को हुआ, जब भारत में जन्मी 32 महीने की मादा चीता **केजेपी21** ने **पांच स्वस्थ शावकों** को जन्म दिया। इसके साथ ही वह **मुखी** और **केजीपी12** के बाद प्रजनन करने वाली भारत में जन्मी तीसरी मादा चीता बन गई। इन शावकों का पिता बोत्सवाना से लाया गया एक नर चीता है। इस तरह, इनके जन्म के साथ भारत में जन्मे चीतों की आबादी में बोत्सवाना की आनुवंशिक वंशावली भी शामिल हुई है।

भारत में चीता पुनर्वास के लिए तैयार की गई राष्ट्रीय कार्ययोजना **(नेशनल एक्शन प्लान फॉर चीता इंट्रोडक्शन)** के तहत यह घटनाक्रम विशेष महत्व रखता है। इस कार्ययोजना में भारत में जन्मी चीतों की पहली पीढ़ी (एफ1 पीढ़ी) द्वारा सफलतापूर्वक प्रजनन को उन प्रमुख उपलब्धियों में शामिल किया गया है, जिन्हें नए क्षेत्रों में चीतों की आबादी को सफलतापूर्वक स्थापित करने के लिए आवश्यक माना गया है। **इस प्रकार, केजेपी21 का प्रजनन इस लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।**

इसके बाद, **20 नवंबर 2026** को शावकों के दूसरे समूह का जन्म हुआ। इस दिन बोत्सवाना से लाई गई 30 महीने की मादा चीता **केओएमजी3** ने **चार स्वस्थ शावकों को जन्म दिया**। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि **कोएमजी3 भारत में शावकों को जन्म देने वाली बोत्सवाना से लाई गई पहली मादा चीता** है। उसने चार महीने से अधिक समय तक जंगल में रहने के बाद खुले प्राकृतिक परिवेश में इन शावकों को जन्म दिया। वर्ष 2022 में चीता पुनर्वास कार्यक्रम शुरू होने के बाद यह **खुले जंगल में किसी चीते के प्रजनन का दूसरा पुष्ट मामला** भी है। इसमें क्लोज्ड नेचुरल एरिया यानी सीएनए को शामिल नहीं किया गया है। ये छोड़े गए क्षेत्रों के भीतर स्थित बड़े, संरक्षित और बाड़ों से घिरे अनुकूलन क्षेत्र होते हैं। जंगल में सफल प्रजनन भी राष्ट्रीय कार्ययोजना में कार्यक्रम के दीर्घकालिक लक्ष्यों की दिशा में हुई प्रगति के आकलन के एक मानदंड के रूप में निर्धारित किया गया है। यह वैश्विक मेटापॉपुलेशन संरक्षण पहलों की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है,

क्योंकि भारत अफ्रीकी उपमहाद्वीप में अलग-अलग क्षेत्रों में फैली हुई चीतों की आबादियों से आने वाले चीतों के प्रजनन के लिए उपयुक्त स्थान उपलब्ध करा रहा है।

नवंबर में शावकों के जन्म के साथ ही **भारत में चीतों की कुल संख्या बढ़कर 62 हो गई है, जिनमें 43 चीते देश में ही जन्मे हैं**। अब भारत में जन्मे चीतों की संख्या कुल चीता आबादी का लगभग 70 प्रतिशत है। यह दर्शाता है कि देश में चीतों का प्रजनन कार्यक्रम की आबादी बढ़ाने में लगातार महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। **इन दोनों शावक समूहों के जन्म से भारत में चीतों की आबादी में कुल नौ नए शावक जुड़े** हैं। उनका जन्म संरक्षण के प्रयासों में एक उत्साहजनक उपलब्धि है। हालांकि, इन शावकों का जीवित रहना और भविष्य में उनका प्रजनन करना संरक्षण कार्यक्रम की प्रगति के महत्वपूर्ण संकेतक होंगे।

- भारत में चीता पुनर्वास से प्राकृतिक प्रजनन तक का सफर

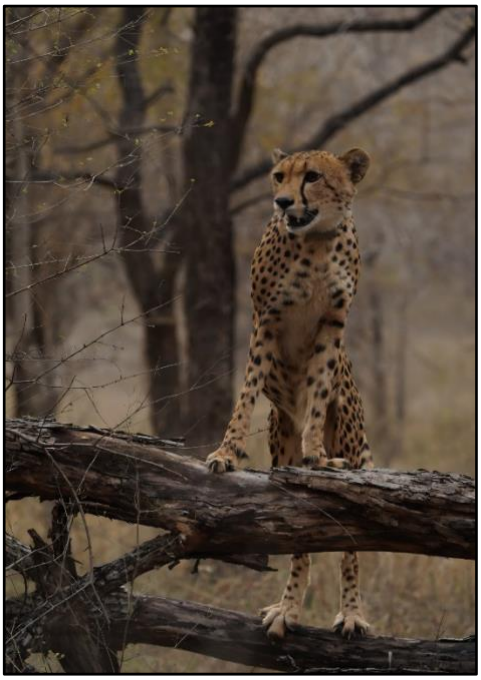
आखिर कहां लुप्त हो गए भारत के चीते?

भारत में चीता वर्ष 1952 में आधिकारिक रूप से विलुप्त घोषित कर दिया गया था। भारत में चीतों की मौजूदगी की अंतिम पुष्टि वर्ष 1947 में वर्तमान छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले के साल वनों में हुई थी। दिसंबर 1947 में भारत में मौजूद अंतिम तीन जंगली एशियाई चीतों को इन्हीं साल वनों में गोली मारकर मार दिया गया था। इस प्रकार, भारत ने उस प्रजाति को खो दिया, जो कभी उत्तर में पंजाब से लेकर दक्षिण में तिरुनेलवेली तक के क्षेत्रों में पाई जाती थी। भारत में पाई जाने वाली मूल एशियाई चीता प्रजाति के विलुप्त होने के पीछे अत्यधिक शिकार, अवैध शिकार और शिकार के खेल के लिए चीतों के इस्तेमाल जैसे कई कारण थे। इसके अलावा, बड़े पैमाने पर कृषि विस्तार के कारण प्राकृतिक आवासों का नष्ट होना, शिकार (भोजन) बनने वाले वन्यजीवों की संख्या में कमी, जलवायु संबंधी दबाव तथा चीतों की प्रजनन दर कम होने और आनुवंशिक विविधता सीमित होने से उनके विलुप्त होने की प्रक्रिया और तेज हो गई। प्रोजेक्ट चीता दुनिया में अपनी तरह का पहला ऐसा प्रयास है, जिसके तहत पुनर्वास के उद्देश्य से एक बड़े मांसाहारी वन्यजीव को एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में स्थानांतरित किया गया है।

भारत में चीतों की वापसी की कहानी 17 सितंबर 2022 को **प्रोजेक्ट चीता** के शुभारंभ के साथ फिर से शुरू हुई। इस दिन कूनो राष्ट्रीय उद्यान में एक ऐतिहासिक पहल के तहत नामीबिया से लाए गए आठ चीतों को क्वारंटाइन के लिए बनाए गए बाड़ों में छोड़ा गया। प्रधानमंत्री ने स्वयं इन चीतों को बाड़ों में छोड़ा था। इसके बाद फरवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका से 12 और चीते भारत लाए गए। इस तरह भारत में चीतों के पुनर्वास के लिए कुल 20 चीतों का एक शुरुआती समूह तैयार हो गया। यह परियोजना आज भी दुनिया में किसी बड़े मांसाहारी वन्यजीव को **एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में स्थानांतरित करने का अपनी तरह का पहला प्रयास** है। प्रोजेक्ट चीता का संचालन पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) के माध्यम से किया जा रहा है। इसका उद्देश्य खुले वनों और घास के मैदानों के प्रमुख वन्यजीव के रूप में चीते को फिर से स्थापित करना है।

28 फरवरी 2026 को बोत्सवाना से नौ और चीतों के भारत आने के साथ इस कार्यक्रम का दायरा और बढ़ा। इसी दिन छह मादा और तीन नर चीतों को कूनो में बनाए गए क्वारंटीन बाड़ों में छोड़ा गया। चीतों के लिए हर नया स्रोत देश ऐसी आबादी में आनुवंशिक विविधता बढ़ाने में योगदान देता है, जिसे आने वाले कई दशकों तक अपने दम पर कायम रहना है।

चीतों की आबादी में स्वाभाविक वृद्धि



किसी भी पुनर्वास कार्यक्रम की सफलता तभी मानी जाती है, जब दूसरे क्षेत्रों से लाए गए वन्यजीव नए प्राकृतिक परिवेश में अच्छी तरह ढल जाएं और वहां स्वाभाविक रूप से प्रजनन करने लगें। इस कसौटी पर देखें तो भारत में चीतों की आबादी अब मुख्य रूप से देश की धरती पर जन्मे शावकों के माध्यम से बढ़ रही है।

भारत में जन्मे चीतों द्वारा प्रजनन अब देश में चीतों की आबादी बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण आधार बन गया है। इसकी शुरुआत नवंबर 2025 में हुई, जब प्रोजेक्ट चीता के तहत भारत में जन्मी पहली मादा चीता मुखी ने पांच शावकों को जन्म दिया। इसके बाद भारत में जन्मी दो अन्य मादा चीतों–केजीपी12 और केजेपी21—ने भी कूनो में शावकों को जन्म दिया। इन शावकों का जन्म इस बात का प्रमाण है कि भारत में जन्मे चीते यहीं बड़े होकर प्रजनन करने में सक्षम हैं और इस तरह प्रजनन का पूरा चक्र सफलतापूर्वक पूरा हो रहा है। यह भारत में चीतों के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति है। अब प्रयास केवल अलग-अलग चीतों के जीवित रहने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि देश में चीतों की ऐसी आबादी विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, जो प्राकृतिक रूप से अपनी संख्या बढ़ाने में सक्षम हो।

इसके अलावा, प्रजनन की हर नई वंशावली महत्वपूर्ण है, क्योंकि बड़े मांसाहारी वन्यजीवों की शुरुआती आबादी में आमतौर पर आनुवंशिक विविधता सीमित होती है। नामीबिया, दक्षिण अफ्रीका और बोत्सवाना से चीते लाने से योजनाबद्ध तरीके से इस विविधता को बढ़ाने में मदद मिली है। जीन पूल में अधिक विविधता होने से चीतों में रोगों से लड़ने की क्षमता और प्रजनन क्षमता बेहतर होती है। साथ ही, इससे आने वाली पीढ़ियों को दीर्घकाल तक बदलती परिस्थितियों का सामना करने में भी मदद मिलती है।

चीतों के संरक्षण और पुनर्वास का वैज्ञानिक आधार

कूनो राष्ट्रीय उद्यान का चयन विशेषज्ञों द्वारा किए गए आकलन के आधार पर किया गया था। इस आकलन में चीतों के लिए उपयुक्त प्राकृतिक आवास, शिकार के लिए पर्याप्त वन्यजीवों की उपलब्धता और मानवीय गतिविधियों से होने वाले व्यवधान जैसे पहलुओं को ध्यान में रखा गया। इससे पहले, 24 गांवों के 1,545 परिवारों के पुनर्वास के बाद लगभग 6,258 हेक्टेयर भूमि वन्यजीव संरक्षण के लिए उपलब्ध हुई। इन प्रयासों से मानवीय

दबाव कम करने और चीतों के लिए अनुकूल आवास तैयार करने में मदद मिली। इसके साथ ही, घास के मैदानों में सुधार, शिकार बनने वाले वन्यजीवों की संख्या बढ़ाना और जल प्रबंधन जैसे आवास सुधार संबंधी उपाय भी चीता पुनर्वास कार्यक्रम को मजबूती दे रहे हैं।

प्रोजेक्ट चीता का संचालन एक वैज्ञानिक रूपरेखा के तहत किया जा रहा है, जो संरक्षण के उद्देश्य से वन्यजीवों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण से संबंधित **इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन)** के दिशा-निर्देशों पर आधारित है। भारत में चीता लाने के लिए *एक्शन प्लान फॉर इंट्रोडक्शन ऑफ चीता इन इंडिया* **भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई), नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी (एनटीसीए)** और **मध्य प्रदेश वन विभाग** ने संयुक्त रूप से तैयार किया था। चीतों की निगरानी के लिए उपग्रह रेडियो कॉलर, कैमरा ट्रैप और क्षेत्रीय अवलोकनों का उपयोग किया जाता है। निर्धारित मार्गों पर दूरी-आधारित सर्वेक्षण के माध्यम से शिकार बनने वाले वन्यजीवों की संख्या का अनुमान लगाया जाता है और प्राकृतिक आवास की स्थिति का आकलन किया जाता है। पशु चिकित्सा दल चीतों के स्वास्थ्य, शारीरिक स्थिति, चोटों और प्रजनन संबंधी गतिविधियों पर लगातार नजर रखते हैं।

चीतों को खुले प्राकृतिक परिवेश में छोड़ने से पहले **क्लोज्ड नेचुरल एरिया (सीएनए)** में रखा जाता है। चरणबद्ध तरीके से चीतों को नए वातावरण में ढालने की इस पद्धति (सॉफ्ट रिलीज) के तहत प्रत्येक चीते को अपनी गति से वहां की भौगोलिक परिस्थितियों, शिकार की उपलब्धता और जलवायु के अनुकूल होने का अवसर मिलता है। **चीतों का सफल प्रजनन** इस बात का भी संकेत है कि वे कूनो की मौजूदा परिस्थितियों में प्रजनन करने में सक्षम हैं। हालांकि, केवल प्रजनन होना ही इस बात का प्रमाण नहीं है कि चीतों की आबादी अपने आप दीर्घकाल तक बनी रहने में सक्षम बन गई है। प्राकृतिक परिवेश में जन्मे शावकों का जीवित रहना भी कार्यक्रम की प्रगति का एक महत्वपूर्ण पैमाना है। राष्ट्रीय कार्ययोजना में शावकों का एक वर्ष से अधिक समय तक जीवित रहना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में निर्धारित किया गया है। इस संवेदनशील अवधि में लगातार निगरानी से शावकों के जीवित रहने की स्थिति, उनके स्वास्थ्य और कार्यक्रम की दीर्घकालिक संभावनाओं का आकलन करने में मदद मिलती है।

घास के मैदानों का संरक्षण, शिकार की उपलब्धता और स्थानीय समुदायों की भागीदारी

प्रोजेक्ट चीता के तहत चीते को संरक्षण के लिए एक प्रमुख और व्यापक प्रभाव डालने वाली प्रजाति के रूप में चिन्हित किया गया है। इसके संरक्षण के लिए खुले वनों, घास के मैदानों और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के प्राकृतिक आवासों को फिर से बेहतर बनाना आवश्यक है। कूनो में चीतल, सांभर, नीलगाय, चिंकारा, चौसिंगा, काला हिरण और अन्य जंगली वन्यजीव पाए जाते हैं। इनमें चीतल शिकार के रूप में सबसे अधिक उपलब्ध है और चीतों द्वारा किए गए शिकार के दर्ज मामलों में इसकी हिस्सेदारी लगभग तीन-चौथाई है। घास के मैदानों की स्थिति में सुधार से व्यापक प्राकृतिक क्षेत्र में मिट्टी की स्थिरता बढ़ाने, पानी को जमीन में बनाए रखने और कार्बन के भंडारण में भी मदद मिलती है।

कूनो के आसपास रहने वाले स्थानीय समुदाय इस प्रयास में केवल दर्शक नहीं, बल्कि इसके सक्रिय भागीदार हैं। उद्यान के आसपास के 80 गांवों में **450 से अधिक चीता मित्र** स्थानीय स्तर पर इस कार्यक्रम के प्रति जागरूकता बढ़ाने और संरक्षण प्रयासों में सहयोग देने का काम कर रहे हैं। इस कार्यक्रम के तहत ट्रैकर, गश्ती दल के सदस्यों और प्रशिक्षित गाइडों सहित लगभग **380 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार** मिला है। **कूनो के आसपास के गांवों को इको-टूरिज्म से होने वाली आय का पांच प्रतिशत हिस्सा भी दिया जाता है**। सड़कों, चेक डैम और साफ-सफाई से जुड़े **इको-डेवलपमेंट कार्य** सौ से अधिक गांवों तक फैले हुए हैं। संरक्षण के प्रयास तब अधिक टिकाऊ बनते हैं, जब स्थानीय समुदायों को भी उनसे होने वाले लाभ में हिस्सेदारी मिलती है।

भविष्य की दिशा और चुनौतियां

दीर्घकालिक लक्ष्य **वर्ष 2032 तक चीतों की 60 से 70** की ऐसी आबादी विकसित करना है, जो प्राकृतिक रूप से अपनी संख्या बढ़ाने में सक्षम हो। इसके लिए कूनो और गांधी सागर के आसपास के क्षेत्रों में लगभग **17,000 वर्ग किलोमीटर** के भू-भाग में चीतों की आबादी विकसित करने की योजना है।

मध्य प्रदेश स्थित गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य को इस कार्यक्रम के तहत दूसरे स्थल के रूप में विकसित किया गया है। अप्रैल 2025 में कूनो राष्ट्रीय उद्यान से प्रभाश और पावक नाम के पहले दो चीतों को यहां स्थानांतरित किया गया था। इसके बाद दो मादा चीतों को भी इस अभयारण्य में लाया गया है।

गांधी सागर में शिकार की उपलब्धता बढ़ाने, प्राकृतिक आवास तैयार करने और चरणबद्ध तरीके से चीतों को छोड़ने के लिए एक अलग कार्ययोजना बनाई गई है। इसके साथ ही, अन्य उपयुक्त प्राकृतिक आवासों का भी आकलन किया जा रहा है, ताकि चीतों की आबादी केवल एक ही संरक्षित क्षेत्र तक सीमित न रहे।

चीतों की संख्या बढ़ने के साथ ही मध्य प्रदेश में उनके लिए नए प्राकृतिक आवास भी विकसित किए जा रहे हैं, ताकि उन्हें राज्य के अधिक विस्तृत भू-भाग में बसाया जा सके। अक्टूबर 2026 में सागर जिले का **वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व** राज्य में चीतों के तीसरे आवास के रूप में विकसित हुआ। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कूनो राष्ट्रीय उद्यान से लाए गए दो चीतों को यहां छोड़ा।

भारत में चीतों की कुल संख्या 62 हो गई है, जो निर्धारित लक्ष्य की निचली सीमा तक पहुंचती है। हालांकि, इस संख्या में बहुत कम उम्र के शावक भी शामिल हैं, जिनका जीवित रहना अभी सुनिश्चित नहीं माना जा सकता। इसलिए, हाल ही में जन्मे दो समूहों के नौ शावकों का आगमन एक उत्साहजनक पड़ाव तो है, लेकिन इसे कार्यक्रम की अंतिम सफलता नहीं माना जा सकता। इन शावकों का जीवित रहना और भविष्य में उनका प्रजनन करना ही कार्यक्रम की सफलता का अधिक सार्थक पैमाना होगा। हर नया शावक समूह भारत को चीतों की ऐसी आबादी विकसित करने के लक्ष्य के और करीब ले जाता है, जो प्राकृतिक परिवेश में लंबे समय तक बनी रह सके।

संदर्भ

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

- https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2338867&reg=3&lang=1
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2319097&reg=48&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2233898&reg=48&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2202894&reg=1&lang=1
- https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2025/dec/doc20251212728901.pdf
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2192109&reg=3&lang=2

MyGov (मायगॉव)

- https://www.facebook.com/reel/1859111448551664

नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी

- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/Others/Action_Plan_Cheetah_Introduction_Dec21.pdf
- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/Others/GWLS_Cheetah_Action_PLan_2024_Low_Res.pdf
- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/AITM/Cheetah_narrow_booklet-6x11-lowre.pdf

जिला प्रशासन, श्योपुर

- https://sheopur.nic.in/en/tourist-place/kuno-national-park/

प्रसार भारती समाचार सेवाएँ

- https://www.newsonair.gov.in/first-india-born-cheetah-gives-birth-to-five-cubs-at-kuno-national-park-in-madhya-pradesh
- https://www.newsonair.gov.in/madhya-pradesh-cm-dr-mohan-yadav-releases-two-cheetahs-in-gandhi-sagar-sanctuary
- https://newsonair.gov.in/indias-cheetah-population-rises-to-52-four-years-after-reintroduction/
- https://ddnews.gov.in/en/veerangana-durgavati-tiger-reserve-set-to-become-third-home-for-cheetahs-in-madhya-pradesh/

पीआईबी रिसर्च

****

पीके/केसी/आरटी/डीवी